षष्ठ अध्याय
गद्य–काव्य

संस्कृत गद्य का प्रयोग वैदिक संहिताओं से ही प्रारम्भ होता है। समग्र ब्राह्मणग्रन्थ गद्यरूप में मिलते हैं। आरण्यकों में भी इसकी प्रचुरता है लेकिन इसकी अपेक्षा लौकिक संस्कृत में इसका प्रयोग कम हुआ है। ईस्वी सन् के आरम्भ में संस्कृत गद्य ने अपने मौलिक ओर विकासात्मक रूप के साथ काव्यात्मक रूप भी लिया जिसमें पद्यकाव्य की विशिष्टताएँ (भाव और रस, अंलकार, समासों का प्रयोग, भाषा की सजावट आदि) आ गई। इसी कारण यह सामान्य गद्य नहीं, अपितु गद्यकाव्य कहलाया। दण्डी ने काव्यादर्श' में गद्यकाव्य की परिभाषा देकर इसे आख्यायिका कथा के रूप में विभाजित किया – *''अपादः पदसन्तानो गद्यमाख्यायिका कथा''* (1/23)। आठवीं शताब्दी तक गद्यकाव्य कठिन और विरल हो गया और गद्यकाव्य ही कवियों की कसौटी मानी जाने लगी –*''गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति''*। समासों की प्रचुरता तथा काव्यात्मक गुणों से गद्यकाव्य का सौन्दर्य समृद्ध होता गया।

अभिलेखों में साहित्यिक गद्य का स्पष्ट रूप प्राप्त होता है और इसका विकासशील रूप सुबन्धु, बाण और दण्डी की रचनाओं में प्राप्त होता है।

सुबन्धु

सुबन्धु को प्रथम गद्यकाव्य –लेखक के रूप में जाना जाता है। बाणभट्ट द्वारा प्रशंसित होने के कारण ये बाण से पूर्ववर्ती सिद्ध होते हैं। ''वासवदत्ता '' नामक इनकी एकमात्र रचना प्राप्त होती है। इस रचना का सम्पूर्ण कथानक कल्पित है। इसमें राजकुमार कन्दर्पकेतु तथा राजकुमारी वासवदत्ता के प्रेम और विवाह का रोचक वर्णन है। ये दोनों एक–दूसरे को स्वप्न में देखते हैं और परस्पर अनुरक्त हो जाते हैं। शुक–दम्पती की सहायता से नायक और नायिका का मिलन होता है। वासवदत्ता के पिता शृंगारशेखर के द्वारा विवाह में अड़चन डालने के कारण दोनों प्रेमी जादू के घोड़े पर बैठकर विन्ध्याटवी भाग जाते हैं। कन्दर्पकेतु को सोता हुआ छोड़कर वासवदत्ता जंगल में घूमने निकलती है। तभी उसे अकेला देख कर उसे अपनाने के लिए किरातों के दो दलों में युद्ध होता है। वासवदत्ता वहाँ से भाग कर एक ऋषि के आश्रम में चली जाती है लेकिन आश्रम में अनधिकार प्रवेश के कारण ऋषि के शाप से पाषाण बन जाती है। वासवदत्ता के विरह में कन्दर्पकेतु आत्महत्या करना चाहता है किंतु आकाशवाणी द्वारा आश्वासन पाकर वह रुक जाता है। कन्दर्पकेतु के स्पर्श से वासवदत्ता मानुषी बन जाती है। दोनों राजधानी लौटकर सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगते हैं ।

यद्यपि घटना बहुत छोटी तथा निर्जीव है किंतु सुबन्धु ने अपनी प्रतिभा के आधार पर इसे रोचक बना दिया है। वर्णन–चातुर्य के लिए ही साहित्य–जगत् में सुबन्धु की ख्याति है। इनमें श्लेष की प्रचुरता और वक्रोक्ति का सन्निवेश विशेष रूप से है। श्लेष के प्रयोग में तो सुबन्धु विशेष निपुण हैं। परन्तु कहीं–कहीं श्लेष का प्रयोग इतना अप्रसिद्ध और कठिन है कि उसे समझने में विद्वानों को भी कठिनाई होती है। सुबन्धु के काव्य में कलापक्ष का साम्राज्य है।

बाणभट्ट

संस्कृत गद्यकाव्य के क्षेत्र में बाणभट्ट की कीर्ति सर्वाधिक है। बाण के काल और व्यक्तित्व के विषय में हमें पर्याप्त जानकारी मिलती है क्योंकि इन्होंने हर्षचरित के आरम्भ और कादम्बरी के मंगलपद्यों में अपना विस्तृत परिचय दिया है। इनका जन्म वात्स्यायन गोत्र में हुआ था। इनके पिता का नाम चित्रभानु था। बाण के शैशवकाल में ही इनकी माता का देहान्त हो गया । बाण की विद्वत्ता से प्रसन्न होकर श्रीहर्ष ने उन्हें आश्रय दिया। हर्षवर्द्धन का शासन–काल 606 ई0 से 648 ई0 तक माना गया है। हर्षवर्द्धन का सभापण्डित होने के कारण बाण का भी समय 7वीं शताब्दी सिद्ध होता है ।

बाण की तीन रचनाएँ मिलती हैं– *हर्षचरित (आख्यायिका), कादम्बरी (कथा)* और *चण्डीशतक (दुर्गा की स्तुति का काव्य)*।

हर्षचरित

संस्कृत साहित्य में उपलब्ध आख्यायिकाओं में हर्षचरित सर्वाधिक पुराना है। यह आठ उच्छ्वासों में विभक्त है। इसमें दो कथानक हैं–एक में हर्षवर्द्धन द्वारा बाण को दिए जाने वाले सम्मान का वृत्तान्त है और दूसरे में हर्षवर्द्धन के पूर्वजों और पिता का चित्रण करते हुए हर्ष के राजा बनने के समय की कठिन परिस्थितियों का वर्णन है। शुरू के तीन उच्छ्वासों में बाण की संक्षिप्त जीवनी आयी है। वात्स्यायन वंश में जन्म, पूर्वजों का चरित, बन्धुओं के साथ भ्रमण और प्रत्यावर्त्तन, हर्ष के भाई कृष्ण द्वारा बाण को हर्ष के पास जाने का निमन्त्रण और पुनः वापस लौट कर हर्ष का चरित कहना प्रथम तीन उच्छ्वासों में वर्णित है। बाद के उच्छ्वासों में प्रभाकरवर्धन का जीवन वृत्तान्त, मृत्यु, राज्यवर्धन की हत्या तथा राज्यश्री पर संकट , श्री हर्ष की दिग्विजय–प्रतिज्ञा, हर्ष द्वारा अपनी बहन 'राज्यश्री' को खोजने का प्रयास और उसका मिलना– इन सभी का वर्णन है।

हर्षचरित विशुद्ध साहित्यिक शैली में निबंद्ध एक रोचक वर्णनात्मक काव्य है। यद्यपि कादम्बरी की तरह हर्षचरित की लोकप्रियता नहीं हुई तथापि ऐतिहासिक दृष्टि से यह एक महत्त्वपूर्ण रचना है।

कादम्बरी

कादम्बरी बाणभट्ट की सर्वोत्कृष्ट रचना है। बाण की इस अपूर्ण कृति को उनके पुत्र भूषणभट्ट (या पुलिन्द) ने पूरा किया। इसके दो खण्ड हैं– पूर्वार्द्ध तथा उत्तरार्द्ध । कादम्बरी की कथा एक जन्म से सम्बद्ध न होकर चन्द्रापीड तथा पुण्डरीक के तीन जन्मों से सम्बन्ध रखती है। आरम्भ में राजा शूद्रक का वर्णन है। राजा की सभा में चाण्डालकन्या 'वैशम्पायन' नामक शुक को लेकर आती है जो मनुष्य की बोली में ऋषि जाबालि के द्वारा वर्णित चन्द्रापीड और उनके मित्र वैशम्पायन की कथा सुनाता है। चन्द्रापीड के दिग्विजय पर निकलने के वर्णन के बाद चन्द्रापीड और कादम्बरी की परस्पर अनुरक्ति, पिता के बुलाने पर प्रणय पूर्ति के पहले ही चन्द्रापीड का उज्जयिनी लौटना पूर्वार्द्ध के प्रमुख वर्ण्य विषय हैं।

बाण–पुत्र द्वारा लिखित अंश ही कादम्बरी का उत्तरार्द्ध है। वैशम्पायन के बहुत दिनों तक नहीं लौटने पर चन्द्रापीड उसकी खोज में जाते हैं तो महाश्वेता के शाप से वैशम्पायन के शुक होने की जानकारी मिलती है। मर्माहत चन्द्रापीड की भी मृत्यु हो जाती है। कादम्बरी भी प्राणत्याग करना चाहती है। लेकिन तभी आकाशवाणी होती है कि दोनों सखियों का अपने प्रेमियों से पुनः समागम होगा। चन्द्रापीड–कादम्बरी एवं पुण्डरीक–महाश्वेता के पुनर्मिलन के साथ ही उत्तरार्द्ध की समाप्ति होती है।

कादम्बरी का मौलिक कथानक बाण की कल्पना–शक्ति का उत्कर्ष दिखाता है। यह शान्त–रस–प्रधान रचना है। भाषा और भाव, शब्द और अर्थ दोनों का उचित मिश्रण इस गद्यकाव्य में लक्षित होता है। कवि का लोकवृत्त–ज्ञान अनुभव की दृष्टि से अद्वितीय है। अपने इस अनुभव को बाण ने शूद्रक की राजसभा के विसर्जन का, नायक–नायिकाओं की सूक्ष्म भावना का एवं शृङ्गार और प्रेम के विभिन्न रूपों का वर्णन करने में उत्कृष्ट रूप में प्रयुक्त किया है। बाण प्रभावशाली गद्य लिखने में अत्यन्त प्रवीण हैं। चित्रण की सजीवता तथा प्रभावशालिता के लिए अगर बाण ने समासबहुल शैली का आश्रय लिया है तो छोटे–छोटे वाक्यों के प्रयोग द्वारा उन्होंने शैली को सशक्त तथा प्रभावोत्पादक भी बनाया है। बाण की सूक्ष्म निरीक्षण–शक्ति ने जगत् के किसी क्षेत्र को भी वर्णन से अछूता नहीं रखा है। प्राकृतिक या नैसर्गिक प्रेम या विरह, राजा या तपस्वी किसी विषय के वर्णन में इनकी लेखनी का प्रवाह अवरुद्ध नहीं होता । इसी कारण बाण के लिए यह उक्ति सर्वथा सार्थक है– *"बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम् "।*

दण्डी

सरल–प्राञ्जल–भावपूर्ण गद्य के लेखक के रूप में दण्डी का नाम संस्कृत गद्यकाव्य के इतिहास में अमर है। परम्परागत प्रामणिक रूप में

राजवाहन नामक पुत्र उत्पन्न होता है। उनके मन्त्रियों के भी पुत्र होते हैं। बड़े होने पर यात्रा के लिए ये परदेश जाते हैं लेकिन भाग्यदोष से अलग–अलग देशों में पहुँच जाते हैं। इन्हीं साहसी कुमारों के साहसपूर्ण कार्यों का वर्णन दशकुमारचरित में किया गया है।

दण्डी की गद्यशैली बहुत सुबोध, सरल तथा प्रवाहमयी है। अलंकार के आडम्बर से वे अपनी भाषा को बचाते हैं। व्यावहारिक शैली के अनुरूप ही शब्दों का व्यावहारिक चयन है। अर्थ की स्पष्टता , रस की सुन्दर अभिव्यक्ति, पद का लालित्य तथा दैनन्दिन प्रयोग की क्षमता ही इनकी शैली के विशेष गुण हैं। पदों की सुन्दर सजावट के कारण *"दण्डिनः पदलालित्यम्"* यह प्रशस्ति दण्डी को मिली है।

अम्बिकादत्त व्यास

संस्कृत भाषा के आधुनिक साहित्यकारों में अम्बिकादत्त व्यास अग्रणी हैं। इनके पूर्वज जयपुर निवासी थे लेकिन काशी में आकर बस गए थे। व्यास जी का जन्म तो जयपुर में हुआ परन्तु कार्यक्षेत्र बिहार था। काशी राजकीय संस्कृत कॉलेज से आचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण होकर, बिहार के विभिन्न राजकीय विद्यालयों में ये शिक्षण–कार्य करते रहें। पटना कॉलेज में भी इन्होंने अध्यापन–कार्य किया। 15 नवम्बर 1900 ई0 को इनका देहान्त हो गया।

इनकी तीन रचनाएँ हैं– 'काव्यादर्श', दशकुमारचरित' और 'अवन्तिसुन्दरी कथा'।

काव्यादर्श

यह एक काव्यशास्त्रीय पद्यात्मक ग्रन्थ है। इसके तीन परिच्छेदों में महाकाव्य, गद्यकाव्य, काव्य का महत्त्व, लक्षण, भेद, अलङ्कार चित्रकाव्य तथा काव्यदोषों का वर्णन है।

दशकुमारचरित

'दशकुमारचरित' एक घटना–प्रधान गद्यकाव्य है। इसकी रोमांचक घटनाएँ पाठकों को कभी विस्मित करती है तो कभी विषाद से भर देती है। सम्पूर्ण ग्रन्थ तीन भागों में विभक्त है। (1) पूर्वपीठिका (5 उच्छ्वास): (2) दशकुमारचरित (8 उच्छ्वास) एवम् (3) उपसंहार। पूर्वपीठिका में कथा की पृष्ठभूमि के साथ दो कुमारों की पूरी तथा राजवाहन की अधूरी कथा है। मूलभाग में राजवाहन के साथ अन्य सात कुमारों की कथा वर्णित है। कथा की समाप्ति ही इसका उपसंहार है। संक्षेप में इसकी कथा है– पुष्पपुरी (पटना) का राजा राजहंस मानसार को परास्त करता है। तपस्या के बल से प्रभावसम्पन्न हो वह पुनः पाटलिपुत्र पर चढ़ाई करता है और राजा राजहंस को हराता है। राजहंस जंगल में चला जाता है और वहीं उसे

अम्बिकादत्त व्यास को सर्वाधिक ख्याति महाराष्ट्र–केसरी शिवाजी के जीवन–वृत्त पर आधारित संस्कृत उपन्यास 'शिवराज–विजय' की रचना से प्राप्त हुई। यह घटना–प्रधान रचना है। मुगल शासकों के अत्याचार से उद्विग्न होकर शिवाजी ने स्वतंत्रता के लिए संघर्ष शुरू किया जिसमें उन्हें सफलता भी मिली। बीजापुर के शासक ने अफजल खान को शिवाजी को मारने के लिए भेजा लेकिन शिवाजी ने उसे ही मार दिया। इस प्रकार छत्रपति शिवाजी के चरित और दिग्विजय का वर्णन किया गया है। शिवराजविजय' में 12 अध्याय (निःश्वास) हैं। इसकी भाषा सरल, सुबोध एवं भाव से ओत–प्रोत है। इसमें वीररस की प्रधानता है लेकिन आवश्यकतानुरूप अन्य रसों का भी समावेश हुआ है।

अन्य गद्यकार और उनके गद्यकाव्य

परवर्ती गद्यकारों ने तो प्रायः बाण का ही अनुकरण किया है। धारा के जैन कवि 'धनपाल' द्वारा रचित *'तिलकमञ्जरी'* में बाण की शैली का अनुकरण होने पर भी लेखक की शैली में सुगमता है। 'वादीभसिंह' (11 वीं शताब्दी) ने *'गद्यचिन्तामणि'* नामक गद्यकाव्य लिखा। प्रभाचन्द्र (12 वीं शताब्दी) ने *'गद्यकथाकोष'* के रूप में 89 कथाओं की काव्यात्मक प्रस्तुति की है। *विश्वेश्वर पाण्डेय'* (18 वीं शताब्दी) ने *'मन्दारमञ्जरी '* नामक एक महनीय गद्यकाव्य लिखा।

आधुनिक काल में बिहार के *डॉ0 रामकरण शर्मा* ने *सीमा* तथा *रयीशः* नामक दो गद्यकाव्य उपन्यास के रूप में लिखे हैं।

कथा और आख्यायिका में भेद

'साहित्यदर्पण' में स्पष्ट रूप से इनका भेद अंकित है– (क) कथा में कथावस्तु कविकल्पित होती है जबकि आख्यायिका में ऐतिहासिक, (ख) कथा का विभाजन नहीं होता जबकि आख्यायिका उच्छ्वासों या निःश्वासों में विभक्त होती है, (ग) कथा में मुख्य कथानक को लाने के लिए इसका आरम्भ दूसरी कथा से होता है जबकि आख्यायिका में कवि अपने वृत्तान्त से कथा को आरम्भ करता है। (घ) कथा के आरम्भ में सज्जनों की प्रशंसा, दुष्टों की निन्दा तथा कवि के वंश का वर्णन होता है जबकि आख्यायिका में प्राचीन कवियों की प्रशंसा पद्य में और कवि–वंश वर्णन गद्य में होता है।

अभ्यास

1. संस्कृत गद्य का आरम्भ कहाँ से होता है?
2. शास्त्रीय गद्य में किन विषयों का निरूपण है?
3. गद्यकाव्य के प्रथम लेखक के रूप में किसे जाना जाता है?
4. बिहार के किस लेखक ने कौन–कौन गद्यकाव्य लिखे हैं ?

5. वासवदत्ता का कथानक संक्षेप में लिखें।

6. बाणभट्ट का जीवन–वृत्त अपने शब्दों में लिखें।

7. बाणभट्ट की प्रसिद्ध रचनाएँ कौन सी है?

8. 'दशकुमारचरित' की शैली के विषय में लिखें।

9. पं0 अम्बिकादत्त व्यास का परिचय लिखें।

10. शिवराज विजय में वर्णित विषय का पचास शब्दों में वर्णन करें।

11. कथा और आख्यायिका में क्या अन्तर है?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें–

(क) वासवदत्ता के पिता का नाम .... है।

(ख) बाणभट्ट का जन्म .... गोत्र में हुआ था।

(ग) बाण .... के सभापण्डित थे।

(घ) बाणभट्ट के पिता का नाम .... है।

(ङ) हर्षचरित में .... उच्छ्वास है।

(च) कादम्बरी को बाणभट्ट के पुत्र .... ने पूरा किया ।

(छ) अम्बिकादत्त व्यास का जन्म .... में हुआ था।

(ज) शिवराज विजय में .... रस की प्रधानता है।

(झ) 'तिलकमञ्जरी' के लेखक .... हैं।

(ञ) कथा में कथावस्तु .... होती है।

2. *स्तम्भ 'क' एवं स्तम्भ 'ख' का सुमेल करें–*

स्तम्भ 'क'	*स्तम्भ 'ख'*
1. सुबन्धु	(क) दशकुमारचरित
2. बाणभट्ट	(ख) शिवराजविजय
3. दण्डी	(ग) तिलकमंजरी
4. अम्बिकादत्त व्यास	(घ) कादम्बरी
5. धनपाल	(ङ) वासवदत्ता

3. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखें:–

वासवदत्ता, हर्षचरित, कादम्बरी, दण्डी, शिवराजविजय,